।।श्रीगणेशाय नमः ।।

।। चमत्कार चिन्तामणिः।।

(भावानुवादः)

।। अथ सूर्यस्य द्वादश भावफलम् ।।

लग्न भावफल

तनुस्थो रविः तुङ्गयष्टिं विधत्ते मनः संतपेत् दारदायादवर्गात्।

विपुः पीड्यते वातपित्तेन नित्यंस वै पर्यटन् ह्लासवृद्धिं प्रयाति।। 1।।

जिस जातक के जन्मलग्न में सूर्य स्थित हो, वह तुलनात्मक रूप से ऊँचे-लम्बे शरीर वाला होता है। भार्या, पुत्र, बन्धु, बाँधवों के विषय में, मन में विकलता रहती है। इस जातक के देह को अधिकांशतः वातपित्तादि विकार पीड़ित करते रहते हैं। जीवन में अनेक बार प्रवासी की तरह रहना होता है और धन-वैभव में उतार-चढ़ाव (न्यूनाधिक्यता) निरन्तर चलता है।। 1।।

धन भावफल

धने यस्य भानुः स भाग्याधिकः स्यात्,

चतुष्पात् सुखं सद्व्यये स्वं च याति।।

कुटुम्बे कलिः जायया जायतेऽपि,

क्रियानिष्फला याति लाभास्य हेतोः।। 2।।

जिस मानव के लग्न से द्वितीय स्थान में जन्म का सूर्य हो, तो वह भाग्य की कृपा से युक्त होता है। चौपाये अर्थात् गाय, बैल, भैंस, घोड़े आदि का सुख, समय और परिवेश के अनुसार पाता है। उसका धन श्रेष्ठ कार्यों में व्यय होता है। स्त्रीजनित कारणों से स्वयं के कुटुम्बादि में भी क्लेश, तनाव आदि का अनुभव करता है। धनलाभ के संबंध में अनेक विस्तृत योजनाओं द्वारा परिश्रम करके पर भी जातक का प्रयत्न निष्फल होता है।। 2।।

तृतीय भावफल

तृतीये यदाऽहर्मणिर्जन्मकाले प्रतापाधिकं विक्रमं चाऽऽतनोति।

तदा सोदरैस्तप्यते तीर्थचारी सदाऽरिक्षयः सङ्गरे शं नरेशात्।।3।।

जिसके जन्माङ्गचक्र में सहज स्थान में सूर्य हो, तो ऐसा जातक प्रतापी (तेजस्वी), पराक्रमी तथा उद्यमी होता है। सहोदर भ्राताओं के कारण व्याकुल रहता है। देशान्तर में, तीर्थ में भ्रमण करना उसे अच्छा लगता है। विवादों में, सदैव इस जातक के शत्रु पराजित होते हैं। राजकीय पक्ष (सरकार) से जातक लाभ एवं सन्तुष्टि प्राप्त करता है।। 3।।

चतुर्थ भावफल

तुरीये दिनेशेऽतिशोभाधिकारी जनः संल्लभेत् विग्रहे बन्धुतोऽपि।

प्रवासी विपक्षाहवे मानभङ्गं कदाचिन्न शान्तं भवेत् तस्य चेतः।। 4।।

जिस मनुष्य की जन्म कुण्डली में, सूर्य चतुर्थ स्थान में जन्म समय होता है, वह प्रतिष्ठाकारक पद एवं अधिकार प्राप्त करता है। भाइयों-बन्धुओं से मतवैभिन्नय रहता है परदेश (जन्म भूमि से दूर) मे निवास करता है। विवाद में, मुकदमें (लड़ाई-झगड़े) आदि में, शत्रुओं द्वारा इसके सम्मान को चोट पहुँचती है। ऐसे जातक का चित्त सदैव ही अशांत रहता है। अर्थात् उद्विग्नता प्रतीत होती है।। 4।।

पंचम भावफल

सुतस्थानगे पूर्वजापत्यतापी कुशाग्रामतिः भास्करे मन्त्रविद्या।

रतिः वञ्च सञ्चकोऽपि प्रमादी मृतिः क्रोडरोगादिजा भावनीया।। 5।।

जिस जातक के जन्म समय, पंचम भावस्थ सूर्य हो, तो वह प्रथम पुत्र के विषय में सन्तप्त रहता है। इसकी बुद्धि, पूर्णरूप से 'प्रत्युत्पन्न मति' कही जा सकती है अर्थात् वह गूढ़ और अप्रकाशित विषयों को भी समझने और समझाने की सामर्थ्य रखता है। यह मनुष्य मन्त्रणा (परामर्श) नीति आदि का विशेष जानकार होता है। लोगों को ठगने एवं धनसंग्रह की प्रवृत्ति भी इसमें पाई जाती है। यह कुछ असावधान और मस्त स्वभाव (बेफिक्र) का होता है। कोढ़ आदि में पीड़ा के कारण इसकी मृत्यु होती है।। 5।।

षष्ठ भावफल

रिपुध्वंसकृद्भास्करो यस्य षष्ठे तनोति व्ययं राजतो मित्रतो वापि।

कुले मातुरापद् चतुष्पादतो वा प्रयाणे निषादैः विषादं करोति।। 6।।

जिस व्यक्ति के जन्मचक्र में, रिपु स्थानगत सूर्य होता है, उसके शत्रु सदैव ही उससे पराजित होते हैं। ऐसे जातक का धन,

विपत्ति में फँसे हुए मित्र की सहायता में अथवा राजकीय अर्थदण्ड (झशरिश्रीं) में व्यय होता है। परिणामस्वरूप यदा-कदा निर्धनता भोगनी पड़ती है। माता के कुल में (ननिहाल में) किंचित् कष्ट होता है। यह जातक चौपायों (गाय-बैल आदि) से कष्ट पाता है। भाव यह कि पशु के सींगों से चोट का भय रहता है। देशान्तर में लम्बी यात्रा में निम्न जाति के लोगों या चोरों द्वारा लूट-मार करने केकारण जातक दुःख पाता है॥ 6॥

सप्तम भावफल

द्युनाथो यदा द्यूनजातो नरस्य प्रियातापनं पिण्डपीडा च चिन्ता।

भवेत् तुच्छलब्धिः क्रयेविक्रयेऽपि प्रतिस्पर्धया नैति निद्रां कदाचित्॥ 7॥

जिस मनुष्य के जन्म समय में, सप्तम भावगत सूर्य हो, उसे पत्नी की ओर से क्लेश तथा शारीरिक पीड़ा एवं मनः सन्ताप भी सहन करना पड़ता है। व्यापारादि (वस्तुओं के क्रय-विक्रय) से उसे बहुत थोड़ा लाभ होता है। मन में ईर्ष्या, तनाव तथा शरीर में रोगादि रहने के कारण यह जातक सुखपूर्वक नहीं सो पाता॥ 7॥

अष्टम भावफल

क्रियालम्पटं त्वष्टमे कष्टभाजं, विदेशीयदारान् भजेद् वाप्यवस्तु।

वसुक्षीणता दस्यु तो वा विलम्वाद्, विपद् गुह्यतां भानुरुग्रां विधत्ते॥ 8॥

जिस जातक के जन्माङ्ग में, अष्टम भाव में सूर्य की स्थिति होती है, वह सभी कार्यककलापों में धूर्तता का प्रदर्शन करता है। इस कारण (संभवतः) दुःख भी भोगता है। अगम्याओं के साथ गमन तथा उनके आग्रह के वशीभूत होकर अभक्ष्य (न खाने योग्य) का भी भक्षण करने में इसे संकोच नहीं होता। चोरी-डकैती आदि के द्वारा शीघ्र ही इसका धन नष्ट हो जाता है। अनेक प्रकार की गोपनीय और कठिनाई से दूर होने वाली, दीर्घकालीन विपत्तियाँ इसे घेर लेती हैं॥ 8॥

नवम भावफल

दिवानायके दुष्टता कोणयाते न चाप्नोति चिन्ता विरामोऽस्य चेतः।

तपश्चर्ययाऽनिच्छयाऽपि प्रयाति क्रियातुङ्गतां तप्यते सोदरेण॥ 9॥

जिस मानव के जन्मसमय भाग्यस्थ सूर्य हो, वह दुष्ट प्रकृति से युक्त होता है। यदि यह जप-तप-दान धर्म भी करता है, तो मात्र दिखावे के लिए, उसके धार्मिक/आध्यात्मिक कार्यों में पुण्य प्राप्ति की, सत्कर्म सम्पन्न करने की भावना न होने के कारण, उसका चित्त अशान्त ही रहता है। लोग इस प्रकार के ढोंगी व्यक्ति की बड़ाई करते हैं। सहोदरों (भाइयों) के प्रति इसका स्नेहपूर्ण व्यवहार नहीं रहता, फलतः उनके विषय में भी इसे मन स्ताप ही बना रहता है।

दशम भावफल

प्रयातोऽशुमान् यस्य मेषूरणेऽस्य श्रमः सिद्धिदो राजतुल्यो नगरस्य।

जनन्यास्तथा यातनामातनोति क्लमः सङ्क्र वल्लभैः विप्रयोगः॥ 10॥

जिस जातक में लगन से दशमस्थ सूर्य हो, तो वह स्वयं के प्रयासों से राजतुल्य सुख भोगने में समर्थ होता है अर्थात् इसे सहजरूप में, अल्पप्रयासों से ही सफलता मिलती है। इसकी माता रोगिणी रहती है, जिससे यह क्लेश पाता है। अपने प्रियजनों (स्त्री, मित्र, बन्धु, आत्मीयजन) से इसे विछोह होता है, जिससे चित्त में विषमता का अनुभव करता है।

एकादश भावफल

रवौ संल्लभेत् त्वं च लाभोपयाते नृपद्वारतो राजमुद्राधिकारात्।

प्रतापानले शत्रवः सम्पतन्ति श्रियोऽनेकधा दुःखमङ्गोद्भवानाम्॥ 11॥

जिस मनुष्य के जन्माङ्ग में लाभ भाव में सूर्य स्थित होता है, वह राजकीय कोष से धन पाता है तथा कदाचित् उच्चपद भी प्राप्त करता है। इसकी तेजस्विता से शत्रु भस्मीभूत अर्थात् पराजित होते हैं। राजकृपा से अनेक प्रकार की श्री-प्रतिष्ठा इसे प्राप्त होती है, परन्तु सन्तानविषयक चिन्ता से इसका हृदय धूमिल रहता है।

द्वादश भावफल

रविर्द्वादशे नेत्रदोषं करोति विपक्षाहवे जायतेऽसौ जयश्रीः।

स्थितिर्लब्धया लीयते देहदुःखं पितृव्यापदो हानिरध्वप्रदेशे॥ 12॥

जिस जातक के चक्र में व्ययभावगत सूर्य हो, वह नेत्र विकार (आँख में तकलीफ) से पीड़ित होता है। शत्रुओं के साथ विवाद हो जाने पर, इसकी सदैव जीत होती है। अपनी उपलब्धियों के विषय में यह स्थिर रहता है। शरीर का कष्ट दूर होता है। पिता के लघुभ्राता (चाचा) की और से कष्ट पाए तथा दीर्घयात्राओं में मार्ग में हानि होने से चित्त अशान्त रहे॥ 12॥

॥ अथ चन्द्रभावफलम् ॥

प्रथम भावफल

विधुर्गोकुलीराजगः सन् वपुस्थो धनाध्यक्षलावण्यमानन्दपूर्णम्।

विधत्ते धनं क्षीणदेहं दरिद्रं जडं श्रोत्रहीनं नरं शेषलग्ने॥ 1॥

जिस जातक के जन्माङ्ग में, प्रथम भाव में, मेष, वृष, कर्क राशि में से किसी में स्थित हो, तो वह धनाध्यक्ष कुबेर के समान ऐश्वर्यशाली होता है और पूर्ण सुख भोगता है। उपर्युक्त तीन राशियों के अतिरिक्त (अन्य नौ राशियों) राशियों में होने पर विपरीत फल होता है अर्थात् मनुष्य धनहीन, निर्बल, बुद्धिहीन, कर्णेन्द्रिय दोषयुक्त (बहिरा) होता है।

द्वितीय भावफल

हिमांशौ वसुस्थानगे धान्यलाभः शरीरेऽतिसौख्यं विलासोङ्गनानाम्।

कुटुम्बे रतिः जायते तस्य तुच्छं वशं दर्शने याति देवाङ्गनाऽपि॥ 2॥

जिस मनुष्य की कुण्डली में धन स्थान में चन्द्र स्थित होता है, तो उसे धान्यलाभ होता है। शारीरिक दृष्टि से अत्यन्त सुखी होता है। नारियों के साथ विलास करता है, परन्तु अपने कुटुम्ब के प्रति अल्पस्नेही होता है। इसकी सुन्दरता से अप्सराएँ भी प्रभावित हो जाती हैं, सामान्य स्त्रियों के विषय में तो कहना ही क्या।

तृतीय भावफल

विधौ विक्रमे विक्रमेणैति वित्तं तपस्वी भवेद्भामिनी रञ्जितोऽपि।

कियत् चिन्तयेत् साहजं तस्य शर्म प्रतापोज्ज्वलो धर्मिणो वैजयन्त्या॥ 3॥

जिस जातक के जन्मचक्र में सहज भाव में चन्द्रस्थित होता है वह स्वयं के प्रयासों से धनार्जन करता है। वह सुन्दरियों द्वारा प्रलोभन दिए जाने पर भी विचलित नहीं होता (सदाचरण पर अडिग रहता है)। इसके द्वारा किए गए श्रेष्ठकार्यों से, इसे उज्ज्वल कीर्ति प्राप्त होती है। भाइयों का सुख भी प्राप्त करता है। नैसर्गिक रूप से भी इसके जीवन में सुख का अभाव नहीं रहता।

चतुर्थ भावफल

यदा बन्धुगो बान्धवैरत्रिजन्मा नृपद्वारि सर्वाधिकारी सदैव।

वयस्यादिमे तादृशं नैव सौख्यं सुतस्त्रीगणात् तोषमायाति सम्यक्॥ 4॥

जिस मनुष्य के जन्मपत्र में, सुखभाव में चन्द्र स्थित हो, तो वह बान्धवों, मित्रों का सहयोग लेकर सुखी होता है और राज्याधिकारी बनता है। प्रारंभिक अवस्था (बचपन) में अल्प सुख ही मिलता है तत्पश्चात् जीवन पूर्ण सुखी होता है। पत्नी-पुत्र आदि का भी पूर्णसुख होता है।

पंचम भावफल

यदा पञ्चमे यस्य नक्षत्रनाथो ददातीह सन्तानसन्तोषमेव।

मतिंनिर्मलां रत्नलाभं च भूमिं कुसीदेन नानाप्रयो व्यावसायात्॥ 5॥

जिस जातक की कुण्डली में पंचम (त्रिकोण) स्थान में चन्द्र विराजित हो, वह सद्गुणी सन्तति पाकर स्वयं को धन्य अनुभव करता है। इसकी बुद्धि स्फटिक की भाँति निर्मल (निर्णायिका बुद्धि) होती है। इसे रत्नों द्वारा, भूमि द्वारा, ब्याज के रुपयों से तथा अन्य प्रकार के व्यापारादि से लाभ होता है।

षष्ठ भावफल

रिपौ राजते विग्रहेणाऽपि राजा जितास्तेऽपि भूयो विधौ सम्भवन्ति।

तदग्रेऽरयो निष्प्रभा भूयसोऽपि प्रतापोज्ज्वलो मातृशीलो न तद्वत्॥ 6॥

जिसके जन्माङ्ग में षष्ठ भाव में चन्द्र बैठा हो, वह शक्तिशाली शत्रुओं से वैर रखने पर भी अपने पराक्रम से विजयी रहता है। शत्रु पुनः-पुनः ऐसे जातक का, संगठित शक्ति से घेराव करते हैं, परनतु हर बार उन्हें पराजय का ही मुँह देखना पड़ता है, ऐसा जातक शत्रुओं सैदव आक्रान्त रहता है और जीत हासिल करता है। ऐसे जातक प्रायः माता के प्रति अधिक सम्मान का भाव नहीं रख पाते।

सप्तम भावफल

ददेद् दारशं सप्तमे शीतरश्मिः धनित्वं भवेद्ध्ववाणिज्यतोऽपि।

रतिं स्त्रीजने मिष्टभुक लुब्धचेताः कृशः कृष्णपक्षे विपक्षाभिभूतः॥ 7॥

सप्तम भावस्थ चन्द्र वाले जातक की स्त्री स्वस्थ शरीर वाली होती है अथवा जातक पूर्ण स्त्री सुख पाता है। दूरस्थ स्थानों की यात्राओं और देशान्तर के व्यापार से इसे द्रव्यलाभ होता है।

कृष्णपक्ष में भार्या के प्रति विशेष प्रेम रखता है। विभिन्न प्रकार के व्यञ्जनों का यह जातक शौकीन होता है तथा इसके चित्त में अनेक वस्तुओं के प्रति लालच होता है। यह दुर्बल देह वाला और शत्रुओं से अभिभूत (पराजित) होता है।

अष्टम भावफल

सभा विद्यते भैषजी तस्यगेहे पचेत् कर्हिचित् क्वाथमुद्‌गोदकानि।

महाव्याधयो भीतयो वारिभूताः शशीक्लेशकृत् सङ्कटान्यष्टमस्थः ॥ 8 ॥

जिस मानव की जन्मपत्रिका में लग्न से अष्टम चन्द्र हो, उसकी सभा (घर) अनेक प्रकार के वैद्यों (डॉक्टरों) से घिरी रहती है। कोई वैद्य ज्वरनाश हेतु काढ़ा तैयार करवाता है, तो कोई मूँग का पथ्य बनाने के लिए कहता है। जल से उत्पन्न होने वाली बीमारियाँ जलोदर आदि तथा जलभय भी उत्पन्न होता है , दुर्जनों द्वारा पीड़ा पहुँचाई जाती है। इस प्रकार अष्टमस्थ चन्द्र क्लेशकर होता है।

नवम भावफल

तपोभावगस्तारकेशो जनस्य प्रजाश्च द्विजाः वन्दिनः दिनः तं स्तुवन्ति।

भवत्येव भाग्याधिको यौवनादेः शरीरे सुखं चन्द्रवत् साहसं च ॥ 9 ॥

भाग्य भाव में स्थित चन्द्र वाला जातक समाज, ब्राह्मण और वन्दीजनों द्वारा अपना यशोगान सुनता है ऐसा जातक किशोरावस्था से ही शारीरिक रूप से सुखी तथा भाग्यशाली होता है। इसका उद्यम और इसकी कार्यशीलता चन्द्र की भाँति ही घटती बढ़ती है अर्थात् इस जातक के जीवन में उतार चढ़ाव अधिक आते हैं।

दशम भावफल

सुखं बान्धवेभ्यः खगे धर्मकर्मा समुद्राङ्गजेशं नरेशादितोऽपि।

नवीनाङ्गना वैभवे सुप्रियत्वं पुरा जातके सौख्यमल्पं करोति ॥ 10 ॥

लग्न से दशमभावस्थ चन्द्र वाला जातक धाम्रिक कृत्यों में अग्रणी तथा पुण्यशाली होता है। बन्धु-बान्धवों एवं समाज के धनी-मानी-यशस्वी से भी इसे सुख और सम्मान मिलता है। नव परिणीताओं (शीघ्र ही विवाह बंधन में बंधी हुई) को देखकर इसके मन में उनके प्रति संतोष उत्पन्न होता है, किन्तु इसका बाल्यकाल अधिक सुख में नहीं बीतता। प्रथम पुत्र का सुख भी इसे पूर्णरूप से प्राप्त नहीं होता।

एकादश भावफल

लभेद् भूमिपादिन्दुना लाभगेन प्रतिष्ठाधिकाराम्बराणि क्रमेण।

श्रियोऽथास्त्रियोऽन्तःपुरे विश्रमन्ति क्रिया वैकृती कन्यका वस्तुलाभः ॥ 11 ॥

जिस जातक की कुण्डली में एकादश भाव में जन्मकालीन चन्द्र हो, उसे राजकीय स्तर पर प्रतिष्ठा, अधिकार आदि प्राप्त होते हैं, उसे (शाल आदि ओढ़ाकर) शासकीय सम्मान-पुरस्कार भी यथा समय मिलते हैं। ऐसे जातक के घर में उत्तम गुणों वाली नारियों तथा लमी का वास रहता है। यदा-कदा इसके कार्य पूर्णरूप से निष्फल रहते हैं। इसके कन्याएँ अधिक होती हैं तथा व्यापारादि से लाभ की संभावना होती है।

द्वादश भावफल

शशी द्वादशे शत्रुनेत्रादिचिन्ता विचिन्त्या सदा सद्‌व्ययो मङ्गलेन।

पितृव्यादि मात्रादितोऽन्तर्विषादो न चाप्नोति कामं प्रियाल्पप्रियत्वम् ॥ 12 ॥

जिसके जन्माङ्गचक्र में द्वादश भावस्थ चन्द्र होता है, उसे शत्रुओं (विरोधियों) से भय तथा नेत्र विकार की आशंका रहती है। विवाहादि मांगलिक कार्यों एवं अन्य प्रकार के धार्मिक कार्यों में ऐसे जातक का धन व्यय होता है, अर्थात् सत्कार्यों में धन जाता है। अपने चाचाओं और मामाओं से इसका सौमनस्य नहीं हो पाता तथा स्त्रियों से भी विशेष आत्मीय भाव नहीं रख पाता। मनोवांछित कार्यों में भी सफलता की संभावना कम रहती है।

॥ अथ मंगल भावफलम् ॥

प्रथम भावफल

विलग्ने कुजे दण्डलोहाग्निभीतिस्तपेन् मानसं केसरी किं द्वितीयाः।

कलत्रादिघातः शिरोनेत्रपीड़ा विपाके फलानां सदैवोपसर्गः ॥ 1 ॥

जिस जातक की जन्मकुण्डली में लग्नस्थित मंगल हो, तो उसे लाठी, लोहा, (हथकड़ी, बेड़ी आदि) तथा अग्नि (जलने) का भय होता है। उसके मानसिक रूप से बहुत उद्विग्नता, उत्तेजना रहती है। उसके प्रियजनों (स्त्री, पुत्र, बांधव आदि) के विषय में उसे दुःख पहुँचता है तथा सिर और नेत्रों में पीड़ा का अनुभव होता है। ऐसे जातक को कार्य का फल मिलते समय

अनेक बाधाएँ आती हैं। यह जातक, परिश्रम और वीरता में, दूसरे सिंह के समान ही क्यों न हो, फिर भी यह अपने कार्यों में सफल नहीं हो पाता।

द्वितीय भावफल

भवेत्तस्य किं विद्यमाने कुटुम्बे, धनेऽङ्गारके यस्य लब्धे धने किम्।

यथा त्रायते मर्कटः कण्ठहारं पुनः सम्मुखं को भवेद् वादभग्नः ॥ 2 ॥

जिस जातक के जन्माङ्गचक्र में द्वितीय स्थान में मंगल स्थित हो, तो उसे कुटुम्बीजनों और धन के संग्रह का कोई लाभ नहीं मिलता। जिस प्रकार कोई वानर अपने गले में पहनाए हुए हार (माला) की उपयोगिता तथा महत्त्व को वास्तविक रूप से नहीं जानता, वैसे ही यह जातक भी कुटुम्ब और धन के सुखों को यथार्थ रूप में नहीं प्राप्त कर पाता। इस जातक से तर्क में पराजित मनुष्य पुनः उसके समझ वाद-विवाद को तैयार नहीं होता।

तृतीय भावफल

कुतो बाहुवीर्यं कुतो बाहुलक्ष्मीस्तृतीयो न चेत् मङ्गलो मानवानाम्।

सहोत्थव्यथा भण्यते केन तेषां तपश्चर्यया चोपहास्यः कथं स्यात् ॥ 3 ॥

यदि किसी जातक के जन्माङ्ग चक्र में तृतीय स्थान में मंगल नहीं है, तो वह बाहुबली या पराक्रमी (उद्यमी) कैसे बनेगा और स्वयं के प्रयासों से अर्जित लक्ष्मी उसे कहाँ से उपलब्ध होगी, उसे सहोदरों की पीड़ा कहाँ होगी और सत्कार्य में चूक हो जाने से उपहास कैसे होगा। भाव यह है तृतीयस्थ मंगल जातक को उद्यमी, लक्ष्मीवान्, भातृपीड़ा से युक्त तथा सुकार्यों में भी उपहास का पात्र बनाता है।

चतुर्थ भावफल

यदा भूसुतः सम्भवेत्तुर्यभावे तदा किं ग्रहाः सानुकूला जनानाम्।

सुहृद्वर्गसौख्यं न किञ्चित् विचिन्त्यं कृपावस्त्रभूमीः लभेद् भूमिपालात् ॥4 ॥

जब भूमिपुत्र मंगल, किसी मनुष्य के जन्मसमय में चतुर्थ भावस्थ होता है, तो अन्य ग्रहों की अनुकूलता भी कोई लाभ नहीं दे पाती। ऐसे जातक कोमित्रों का सुख भी अत्यल्प ही रहता है। राजकीय पक्ष से सम्मान, पुरस्कार तथा भूमि-भवन प्राप्ति की पूर्ण संभावना होती है।

पंचम भावफल

कुजे पञ्चमे जाठराग्निर्बलीयान् न जातं नु जातं निहन्त्येक एव।

तदानीमनल्पा मतिः किल्विषेऽपि स्वयं दुग्धवत् तप्यतेऽन्तः सदैव ॥ 5 ॥

जिस मनुष्य की जन्मकुण्डली में पुत्र भाव में मंगल की स्थिति होती है, वह तीव्र उदराग्नि वाला हो जाता है। उसे इतनी तीव्र भूख लगती है कि भोजन से तृप्ति नहीं मिलती। वह निरन्तर निन्दनीय कार्यों में लिप्त रहता है। महत्त्वाकांक्षाएँ प्रबल होती जाती हैं उनकीपूर्ति न होने से जातक तनावग्रस्त रहता है — जैसे अग्नि पर रखा हुआ दूध जलता है वैसे ही जातक भी भीतर से उत्तेजित रहता है। पंचमभावस्थ अकेला ही मंगल जातक की सन्तान (पुत्र) को नष्ट करने में समर्थ होता है।

षष्ठ भावफल

न तिष्ठन्ति षष्ठेऽरयोङ्गारके वै तदङ्गैरिताः सङ्गरे शक्तिमन्तः।

मनीषी सुखी मातुलेयो न तद्वत् विलीयेत वित्तं लभेतापि भूरि ॥ 6 ॥

जिस जातक के जन्माङ्ग में शत्रुभाव में मंगल स्थित हो, उसके शक्तिशाली शत्रु होते हैं, परन्तु वे सब शत्रु जातक के सम्मुख पराजित होकर, पलायन कर जाते हैं। वह चिन्तनशील अर्थात् बुद्धि-विवेक से युक्त होता है। जीवन में सुख भी पाता है। मातृपक्ष के लिए ऐसा जातक सुखकारक नहीं कहा गया है। षष्ठ स्थानगत मंगल जातक का धन एक बार नष्ट कर उसे पुनः धनवान् बनाता है।

सप्तम भावफल

अनुद्धारभूतेन पाणिग्रहेण प्रयाणेन वाणिज्यतो नो निवृत्तिः।

मुहुर्भङ्गदः स्पर्धिनां भेदिनीजः प्रहारार्दनैः सप्तमे दम्पतिघ्नः ॥ 7 ॥

जिस व्यक्ति की जन्म कुण्डली में सप्तम भाव में मंगल स्थित होता है, तब वह विवाहादि के निश्चय के कारण अथवा व्यापार में लाभ की सम्भावना के कारण, दूरस्थ स्थान से शीघ्र घर नहीं लौट पाता है। शत्रुओं के द्वारा चली गई चालों से तथा उनके द्वारा किए गए कृत्यों से जातक को बार-बार पीड़ा होती है। इसके अतिरिक्त सप्तम स्थान का मंगल जीवन सहचर का नाश करता है। पुरुष की कुण्डली में स्त्री तथा स्त्री की कुण्डली में सप्तम मंगल हो, तो पुरुष की हानि होती है।

अष्टम भावफल

शुभास्तस्य किं खेचराः कुर्युरन्ये विधानेऽपिचेदष्टमे भूमिसूनुः।

सखा किं न शत्रूयते सत्कृतोऽपि प्रयत्नेकृते भूयते चोपसर्गैः॥ 8॥

जिसके जन्म समय में अष्टम भावस्थ मंगल हो, तो भाग्यस्थान में विराजे हुए गुरु-शुक्र आदि शुभग्रह भी, श्रेष्ठफल नहीं दे पाते, क्योंकि मंगल दूषित फलों का देने वाला होकर, अनुकूल फलों की प्राप्ति में बाधा डालता है। अष्टमस्थ मंगल के प्रभाव से अपना परम स्नेही मित्र भी शत्रुवत् व्यवहार करता है। जातक के द्वारा उचित प्रकार से परिश्रम किए जाने पर भी उसे अपने कार्यों में सफलता नहीं मिलती।

नवम भावफल

महोग्रा मतिर्भाग्यवित्तं महोग्रं तपोभावगो मङ्गलस्तं करोति।

भवेन्नादिमः श्यालकः सोदरो वा कुतो विक्रमस्तुच्छलाभे विपाके॥ 9॥

जिस मनुष्य के जन्मलग्न से नवमभाव में मंगल विराजमान रहता है, तो वह जातक तीव्र बुद्धिवाला होता है। ऐसा जातक तेजवान् होता है तथा स्वयं के भाग्य से धनी होता है। उसका अग्रज या बड़ा साला (पत्नी का भाई) नहीं होता है। उसका उद्यम, परिश्रम, उसे बहुत थोड़ा लाभ दिलवाता है।

दशम भावफल

कुले तस्य किं मङ्गलं मङ्गलो नो जनैर्भूयते मध्यभावे यदि स्यात्।

स्वतः सिद्ध एवावतंसीयतेऽसौ वराकोऽपि कण्ठीरवः किं द्वितीयः॥ 10॥

जिस जातक की कुण्डली में दशम भाव में मंगल स्थित होता है, उसके यहाँ मांगलिक कार्यों, प्रसन्नतादायक योजनाओं की अधिकता रहती है। जातक के कार्य अल्पप्रयासों से ही सिद्ध होते हैं तथा अनेक जन इसके अधीनस्थ होते हैं। जातक साधारण कुल में भी जन्म लेकर, सिंह की भाँति (स्वयं के उद्यम से अपना प्रभाव उत्पन्न कर लेता है तथा किसी की सहायता की अपेक्षा नहीं रखता।

एकादश भावफल

कुजः पीडयेल्लाभगोऽपत्यशत्रून् भवेत् सम्मुखो दुर्मुखोऽपि प्रतापात्।

धनं वर्धते गोधनैः वाहनैर्वा सकृच्छून्यतार्थे च पैशुन्यभावात्॥ 11॥

जातक की जन्मपत्रिका में लग्न से लाभस्थ मंगल, जातक की संतान को शत्रुओं को तथा पीड़ित करता है। यदि किसी कारणवश जातक को मुखदोष हो, तो भी धन-वैभव के प्रभाव से वह दूसरों को सुमुख अर्थात् प्रियदर्शन ही दिखाई देता है। सभी इसके प्रताप से अभिभूत होकर इसकी प्रशंसा करते हैं। वह पशुधन एवं वाहनादि के व्यापार से परम धनाढ्य हो जाता है। यह जातक अपना धन चोरी से बचाने के निमित्त, स्वयं को निर्धन के रूप में समाज में व्यक्त करता है।

द्वादश भावफल

शताक्षोऽपि तत् सक्षतो लोहघातैः कुजो द्वादशोऽर्थस्य नाशं करोति।

मृषा किंवदन्ती भयं दस्युतो वा कलिः पारधी हेतु दुःखं विचिन्त्यम्॥ 12॥

व्यय भाव में स्थित मंगल धनहानि के अतिरिक्त, शरीर में अनेक घावों/चोटों के निशान देता है, चाहे वह साक्षात् इन्द्र ही क्यों न हो। यह जातक शत्रुहन्ता भी होता है। झूठी अफवाहों (अपवाद) का सामना करना पड़ता है। चोरों आदि का भय होता है। वाद-विवाद तथा नौकरों के कारण (अधीनस्थों) भी जातक का कष्ट उठाना पड़ता है।

॥ अथ बुधभावफल॥

प्रथम भावफल

बुधो मूर्तिगो मार्जयेदन्यरिष्टा रिष्ठाधिया वैखरी वृत्तिभाजः।

जना दिव्यचामीकरीभूतदेहाश्चिकित्साविदो दुश्चिकित्स्या भवन्ति॥ 1॥

जिस जातक की जन्म कुण्डली में लग्न में बुध स्थित होता है, वह अन्य ग्रहों के दूषित फलों को भी नष्टकर, शुभफल प्रदान करता है। ऐसा जातक उत्तम बुद्धि से युक्त तथा पठन-पाठन एवं लेखनादि कार्यों से आजीविका चलाता है। उसकी काया तपाये हुए कंचन के समान सुन्दर होती है। उसे चिकित्सा पद्धति का ज्ञान होता है, परन्तु स्वयं अस्वस्थ होने पर वह बड़ी कठिनता से स्वस्थ होता है। ऐसा जातक बड़ी चतुरता से कार्य करते हुए किसी के वश में रहते।

द्वितीय भावफल

धने बुद्धिमान् बोधने बाहुतेजाः सभासङ्गतो भासते

व्यास एव।

पृथूदारता कल्पवृक्षस्य तद्वद् बुधैर्भण्यते भोगतः षट्पदोऽयम्।। 2।।

जिस जातक के जन्म समय धन भाव में बुध स्थित हो, वह मनुष्य बुद्धिमान् तथा स्वयं के प्रयत्न से तेजस्वी होता है। विद्वज्जनों के मध्य, सभा में बैठा हुआ वह साक्षात् व्यास के समान महिमामय होता है। यह अत्यनत उदारता पूर्वक दानकार्यों में संलग्न रहता है। इसके इस गुण की प्रशंसा विद्वान् भी करते हैं। यह भौरे की भांति भौतिक जगत् के सुखों का उपभोक्ता होता है।

तृतीय भावफल

वणिङ्मित्रता पण्यकृद्वृत्तिशीलो वशित्वं धियो दुर्वशानामुपैति।

विनीतोऽतिभोगं भजेत् संन्यसेद्वा तृतीयेऽनुजैराश्रितो ज्ञे लतावान्।।

जिस व्यक्ति के जन्माङ्ग चक्र में, लग्न से तृतीय स्थान में बुध हो, वह व्यापारियों से मित्रभाव बनाकर, उनसे व्यापार के तथ्य सीखकर, फिर भलीभाँति व्यापार करता है। जो लोग किसी के भी वश में नहीं होते, उन्हें भी अपनी विनम्रता से अपने अनुकूल बना लेता है और मनचाह लाभ प्राप्त कर लेता है। युवावस्था में पूर्णभोग करने के पश्चात् समय आने पर ऐसाजातक संन्यास ले लेता है। इसके भाई-बन्धु लताओं की भाँति इससे लिपटे (इसके आश्रय में) रहते हैं, वह इच्छानुसार स्वजनों की सहायता भी करता है।

चतुर्थ भावफल

चतुर्थे चरेत् चन्द्रजश्चरुमित्रो विशेषाधिकृद् भूमिनाथो गणस्य।

भवेल्ललेखको लिख्यते वा तदुक्तं तदाशापरः पैतृकं नो धनं च।।

जिस जातक के जन्म समय में चौथे स्थान में बुध स्थित हो, वह श्रेष्ठ मित्रों वाला होता है। वह राजकीय पक्ष में अधिकारी होता है। इसकी वाणी तथा लेखनी में विशेष अधिकार (प्रभाव) होता है और अन्य लोग इसके कह-लिखे हुए का अनुसरण करते हैं। यह जातक पैतृक धन से वंचित रहता है, स्वयं के द्वारा अर्जित धन तथा अधिकार से तुष्ट रहता है।

पंचम भावफल

वयस्यादिमे पुत्रगर्भो न तिष्ठेत् भवेत् तस्य मेघाऽर्थसंवादयित्री।

बुधैर्भण्यते पञ्चमे रोहिणेये कियद् विद्यते कैतवस्याभिचारम्।।

जातक की लग्नकुण्डली में पंचमभावस्थ बुध का फल अच्छा नहीं कहा गया है। पंचमस्थ बुध वाला जातक जीवन की प्रथमावस्था (लगभग 30 वर्ष) तक पुत्र सुख से हीन होता है, कन्या संतति अधिक होती है। स्वयं के बुद्धि-बल से धनार्जन करता है। ऐसा जातक कपटपूर्ण मानसिकता वाला तथा मारणोच्चाटनादि कार्यों से युक्त होता है, इसके मन में दुर्वृत्ति होती है।

षष्ठ भावफल

विरोधो जनानांनिरोधो रिपूणां प्रबोधो यतीनां च रोधोऽनिलानाम्।

बुधे सद्व्यये व्यवहारो निधीनां बलादर्थकृत् सम्भवेच्छत्रुभावे।।

जिस मनुष्य के जन्म समय शत्रुस्थानगत बुध हो, तो ऐसा जातक अनेक व्यक्तियों से विरोध रखता है, शत्रुओं को आगे आने से रोकता है। संन्यासियों से ज्ञानचर्चा में प्रवृत्त होकर विवेक प्राप्त करता है। उदरस्थ वायु के विकार से इसे कब्ज, वातरोगादि होते हैं। यह जातक सत्कार्यों में धन-व्यय करता है तथा अपनी क्षमताओं से धनार्जन भी करता है।

सप्तम भावफल

सुतः शीतगोः सप्तमे शं युवत्या विधत्ते तथा तुच्छवीर्यं च भोगे।

अनस्तंगतो हेमवद् देह शोभां न शक्नोति तत्सम्पदो वानुकर्तुम्।।

जिसका बुध जाया भाव में, जन्म समय स्थित हो, वह उदितावस्था में हो, तो जातक को स्त्री सुख होता है, परन्तु शारीरिक समागम के समय स्तम्भन की अल्पता के कारण (ओज की निर्बलता से) पूर्ण रति सुख में बाधा आती है। जातक के शरीर की शोभा तपे हुए सोने के समान कांतिमयी होती है। उसकी समृद्धि सर्वश्रेष्ठ होती है, यदि बुध अस्तंगत नहीं है।

अष्टम भावफल

शतंजीविनो रंध्रगे राजपुत्रे भवन्तीह देशान्तरे विश्रुतास्ते।

निधानं नृपद् विक्रयाद् वा लभन्ते युवत्युद्भवं क्रोडनं प्रीतिमन्तः।।

जिन मानवों के जन्म समय में लग्न से अष्टम भावस्थ

बुध होता है, वे लम्बी आयु प्राप्त करते हैं। अपने स्थानीय क्षेत्र में तथा दूरस्थ स्थानों पर भी इनकी ख्याति होती है। राजकीय अनुकम्पा से अथवा व्यापारादि कार्यों से धन संचय करता है। स्त्रियों के साथ ह्रास-विलास (मनोरंजन) के अवसर भी जातक को प्राप्त होते हैं।

नवम भावफल

बुधे धर्मगे धर्मशीलोऽतिधीमान् भवेद् दीक्षितः स्वर्धुनीस्नातको वा।

कुलोद्योतकृद्धानुवद्, भूमिपालात् प्रतापाधिको, बाधको दुर्मुखानाम्।।

जिस जातक की कुण्डली में नवम अर्थात् भाग्य भाव में बुधस्थित हो, वह आध्यात्मिक वृत्ति से युक्त, बुद्धिशाली, बैदिक एवं तांत्रिक विधान को जानने वाला और गंगा स्नान का आग्रही होता है। इसके अतिरिक्त वह, सूर्य की भाँति स्वकुल का उद्धार करने वाला, राज्यपक्ष से भी अधिक सबल, और दुर्जनों का दमन करने वाला होता है।

दशम भावफल

मितं सम्वदेन्नो मितं संलभेत् प्रसादादिवैकारि सौराजवृत्तिः।

बुधे कर्मगे पूजनीयो विशेषात् पितुः सम्पदो नीतिदण्डाधिकारात्।।

जिस मनुष्य के जन्माङ्गचक्र में, कर्म स्थान में बुध स्थित होता है, उसे पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होती है इस प्रकार धनाढ्यता के कारण, नीति निपुणता के कारण तथा राजकीय अधिकार (विधि-निषेधयुक्त) से सम्पन्न होने के कारण वह समजा में विशेष सम्मान पाता है। यह लोगों को उचित दण्ड-पुरस्कारादि की व्यवस्था करता है। मितभाषिता का गुण भी होता है। फिर भी इसे असीमित ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

एकादश भावफल

विना लाभभावस्थितं भेशजातं न लाभो न लावण्यमानृण्यमस्ति।

कुतः कन्यकोद्वाहदानं च देयं कथं भूसुरास्त्यक्ततृष्णा भवन्ति।।

यदि किसी जातक के लाभ भाव में बुध ग्रह स्थित नहीं है, तो उसे धनलाभ, सुन्दरता, ऋण से मुक्ति आदि बातें कहाँ से प्राप्त होंगी? उसकी सुपुत्री के विवाह हेतु उपायन (दहेज) कहाँ से प्राप्त हो? उसके घर विप्रदेवता (ब्राह्मण) कैसे तृप्त हो सकेंगे? अर्थात् बुध लाभ (एकादश) भाव में स्थित होकर उक्त फलों में वृद्धि करता है।

द्वादश भावफल

न चेद् द्वादशे यस्य शीतांशुजातः कथं तद्गृहं भूमिदेवा भजन्ति।

रणे वैरिणो भीतिमायान्ति कस्माद् हिरण्यादिकोशं शठः कोऽनुभूयात्।।

जिस जातक की जन्मपत्रिका में लग्न से द्वादश भावस्थ बुध होता है, उसके घर ब्राह्मण सम्मानपूर्वक बुलाए जाते हैं, क्योंकि वह यज्ञादि कृत्यों को सम्पन्न करता है। ऐसा मनुष्य रिपुविजेता होता है अर्थात् इसके शत्रु इससे भयभीत रहते हैं। इस जातक के संचित द्रव्य को कोई दुष्ट मनुष्य नहीं छीन सकता, क्योंकि इसका धन श्रेष्ठकार्यों में व्यय किया जाता है।

अथ गुरुभावफलम्

लग्न भावफल

गुरुत्वं गुणैर्लग्नगे देवपूज्ये सुवेशी सुखी दिव्यदेहोऽल्पवीर्यः।

गतिर्भाविनी पारलोकी विचिन्त्या वसूनि व्ययं सम्बलेन व्रजन्ति।।

जिस मनुष्य के जन्म लग्न में गुरु विद्यमान हो वह गुणों से सम्मान पाता है। सुन्दर वेष धारण करने वाला, सुखी, कांतिमय देहयुक्त और अल्पवीर्य होता है। शरीर के शान्त होने पर (परलोक में) उत्तमगति प्राप्त करता है। श्रेष्ठ प्रकार के कार्यों में (भौतिक कार्यों में भी) ऐसे जातक का धन व्यय होता है।

द्वितीय भावफल

कवित्वेमतिः दण्डनेतृत्वशक्तिः मुखे दोषधृक् शीघ्रभोगार्तएव।

कुटुम्बे गुरौ कष्टतो द्रव्यलब्धिः सदा नो धनं विश्रमेद् यत्नतोऽपि।।

जिस जातक की जन्म कुण्डली में द्वितीय भाव में गुरु स्थित हो, वह कविता रचने की शक्ति रखता है। द्वितीय स्थान का गुरु न्यायालयीन कार्यों में निपुणता अर्थात् दण्डनिर्धारण की शक्ति भी प्रदान करता है। (न्यायाधिपति योग)। कुछ वाणीदोष (वाचालता आदि) भी पाया जाता है। स्तम्भन शक्ति की अल्पता होने से सहवास का सुख अल्परूप में ही मिल पाता है। ऐसे जातक को कष्ट से ही धनप्राप्ति होती है तथा सदैव अत्यन्त प्रयत्न करने पर भी जातक द्रव्य संग्रह में सफल नहीं हो पाता।

तृतीय भावफल

भवेद् यस्य दुश्चिक्यगो देवमन्त्री लघूनां लघीयान्, सुखं सोदराणाम्।

कृतघ्नो भवेन् मित्रसार्थे न मैत्री ललाटोदयेऽप्यर्थलाभो न तद्वत्॥

जिस जातक के जन्माङ्ग में सहज भाव में गुरु स्थित हो, वह अत्यन्त संकुचित मानसिकता वाला होता है। उसे सहोदरों का सुख प्राप्त होता है तथा किसी के उपकार को नहीं मानता है। उसे किसी भी दृष्टिकोण से विश्वसनीय मित्र नहीं मना जाता। भाग्योदय के बाद भी सुखदायक धनलाभ इसे नहीं हो पाता।

चतुर्थ भावफल

गृहद्वारतः श्रूयते वाजिह्वेषा द्विजोच्चरितो वेदघोषोऽपि तद्वत्।

प्रतिस्पर्द्धिन कुर्वते पारिचार्य्यं चतुर्थे गुरौ तप्तमन्तर्गतं च॥

जिस मनुष्य के जन्म समय में, लग्न से चतुर्थ भाव में गुरु हो, उसके घर के मुख्यद्वार पर घोड़ों की हिनहिनाहट होती रहती है। वर्तमान समय में इसका आशय वाहन उच्चवाहन (कार, जीप, ट्रेक्टर, मोटर आदि) से लेना चाहिए तभी प्रासंगिक फल घटित होगा। विप्रों द्वारा किए जाने वाले स्वस्तिवाचन अर्थात् वेदपाठ से इसका घर गूँजता रहता है अर्थात् जातक धार्मिक होता है। इसके शत्रु भी इससे मित्रवत् व्यवहार करते हैं या इसकी सेवा में रहते हैं। ऐसे जातक के मन को सदैव चिन्ता घेरे रहती है।

पंचम भावफल

विलासेमतिः बुद्धिगेदेवपूज्ये भवेज्ज्ल्पकः कल्पको लेखको वा।

निदाने सुते विद्यमानेऽपिभूतिः फलोपद्रवः पक्वकाले फलस्य॥

जिस जातक की जन्म कुण्डली में पंचमभाव में गुरु स्थित हो, तो इस जातक की बुद्धि आनन्द विलास में अधिक संलग्न रहती है। यह जातक अधिक बोलने वाला, कल्पनाशील, लेखकीय प्रवृत्ति का तथा बुद्धिमान होता है। पुत्र के द्वारा सहायता करने पर सम्पदा अधिक प्राप्त न हो तथा कार्यों का फल मिलने में अनेक प्रकार के विघ्न आते हैं।

षष्ठ भावफल

रुजार्तो जनन्या रुजः संभवेयु रिपौ वाक्पतौ शत्रुहन्तृत्वमेति।

बलादुद्धतः को रणे तस्य जेता महिष्यादि शर्मा न तन् मातुलानाम्॥

जिस मनुष्य के रिपुस्थान में, जन्म का गुरु विराजित हो, वह रोग से पीड़ित होने के बाद भी शत्रु को पराजित करने की शक्ति रखता है। स्वबल (स्व उद्यम) के कारण अभिमानी हो जाता है। इसे विवाद में कोई पराजित नहीं कर सकता। चौपायों (गाय, भैंस आदि) आदि से इसे सुख होता है। इसके मामा पक्ष को सुख का अभाव रहता है। इसकी माता को अनेक व्याधियाँ घेरे रहती हैं।

सप्तम भावफल

मतिः तस्यबह्वी विभूतिश्चबह्वी रतिर्वैभवेद्भामिनीनामबह्वी।

गुरुर्वर्गकृद् यस्य जामित्रभावे सपिण्डाधिकोऽखण्ड कम्दर्प एव॥

जिस मनुष्य के जन्मपत्र में, जाया भाव में गुरुइ स्थित हो, उसकी बुद्धि, विलक्षण प्रकार की होती है। इसका वैभव, दूसरों की तुलना में अधिक होता है। स्त्रियों के विषय में आसक्ति, कुछ अल्प ही होती है। अपने कुल में श्रेष्ठता स्थापित करता है, अभिमानी होता है तथा दूसरे कामदेव के समान (सुन्दर) दिखाई देता है।

अष्टम भावफल

चिरं नो वसेत् पैतृके चैवगेहे चिरस्थायिनो तद्गृहं तस्य देहम्।

चिरं नो भवेत् तस्य नीरोमङ्गं गुरुर्मृत्यगो तस्य वैकुण्डगन्ता॥

जिसके जन्मचक्र में अष्टम भाव में गुरु की स्थिति हो, वह अपने पैतृक घर में, अधिक समय तक वास नहीं करता अर्थात् स्वोपार्जित धन से आवासीय सुख भोगता है। वह भवन सुख तथा शरीर (काया) का सुख उसे अधिक दिनों तक नहीं रहता अर्थात् वह बहुत लम्बे समय तक निरोगी नहीं रह पाता, व्याधियाँ उसे घेर लेती हैं। शरीर शान्त होने पर वह वैकुण्ठ लोक (सायुज्यप्राप्ति) की प्राप्ति होती है।

नवम भावफल

चतुर्भूमिकं तद्गृहं तस्य भूमिपतेर्वल्लभोवल्लभा भूमिदेवाः।

गुरौ धर्मगे बान्धवाः स्युर्विनीताः सदालस्यतोधर्मवैगुण्यकारी॥

जिस मनुष्य के जन्माङ्गचक्र में, लग्न से नवमस्थ गुरु

बैठा हो, उसके घर में चारों दिशाओं में द्वार होते हैं अथवा चौराहे पर उसका घर होता है। वह राजकीय कार्यों से लाभ उठाता है तथा ब्राह्मणों पर विशेष स्नेह रखता है अर्थात् धार्मिक वृत्ति का होता है। उसके बन्धु-बाधव उससे विनम्रता का व्यवहार करते हैं। आलस्य के कारण स्वयं वन्दनपूजन आदि कार्य में प्रवृत्त नहीं होता है।

दशम भावफल

ध्वजामण्डपे चित्रशाला पितुः पूर्वजेभ्योऽपि तेजोऽधिकत्वम्।

न तुष्टोभवेच्छर्मणा पुत्रकाणां पचेत् प्रत्यहं प्रस्थसयामुद्रमन्नम्।।

जिस व्यक्ति के जन्म लग्न से दशमभावस्थ गुरु होता है, उसके घर, सभामण्डप आदि पर ध्वजा (पताका) फहराती है, अर्थात् उसे कीर्ति प्राप्त होती है। उसके देवालय या घर में चित्रों के कारण सुन्दरता होती है। उसका तेज, अपने पूर्वजों से भी बढ़-चढ़कर होता है। उसकी पुत्रसंतति से उसे सुख नहीं देती है। उसके घर पर नित्य के भोजन में नमक की एक बड़ी मात्रा व्यय होती है अर्थात् उसके यहाँ प्रतिदिन बहुत लोग भोजन करते हैं।

एकादश भावफल

अकुप्यं च लाभे गुरौ किं न लभ्यं वदन्त्यष्टधीमन्त मन्ये मुनीन्द्राः।

पितुः भारभृत् स्वाङ्गजास्तस्य पञ्च परार्थस्तदर्थो न चेद् वैभवाय।।

जिस जातक की लग्न कुण्डली में एकादश स्थान में गुरु स्थित हो, उसके जीवन में सोने-चाँदी आदि की अल्पता नहीं रहती। उसकी बुद्धि अत्यन्त सूक्ष्म विवेचना करने वाली होती है। यह अपने पिता के कार्य में सहायक होता है और इसके जीवन में पॉच पुत्रों का सुख होता है। यह जातक कृपणता के कारण, अपने धन का उपभोग स्वयं नहीं कर पाता, अन्य लोग इसके धन का लाभ लेते हैं।

द्वादश भावफल

यशः कीदृशं सद्व्यये साभिमाने मतिः कीदृशी वञ्चना चेत् परेषाम्।

विधिः कीदृशोऽर्थस्य नाशो हि चेन त्रयस्ते भवेयुः व्यये यस्य जीवः।।

जिस मनुष्य की कुण्डली में लग्न से व्यय स्थान में गुरु स्थित हो, तो वह अभिमानी होकर ही श्रेष्ठकार्यों में धनव्यय करता है अतः उसे यश नहीं मिलता। दूसरों को सदैव ठगते रहने से उसकी बुद्धि निर्मल नहीं रह पाती। उसके क्रियाकलापों में क्रमबद्धता का अभाव होने से उसके कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न हो पाते। भाव यह है कि द्वादशस्थ गुरु होने पर उक्त फल घटित होते हैं।

।। अथ शुक्र भावफलम्।।

लग्न भावफल

समीचीनमङ्गं समीचीनसङ्गः समीचीनबह्वङ्गना भोगयुक्तः।

समीचीनकर्मा समीलचीनशर्मा समीचीन शुक्रो यदालग्नवर्ती।।

जिस जातक के जन्म समय, प्रथम भाव अर्थात् लग्न में शुक्र स्थित हो (षड्बल से युक्त होकर), तो वह सुन्दर अंगों वाला होता है तथा श्रेष्ठ जनों की संगति करता है। सुन्दर अंग-प्रत्यंगों वाली ललनाओं के साहचर्य को प्राप्त करता है। उत्तम कार्यों (यज्ञ-दानादि) को सम्पन्न करता है। सुन्दर, मधुरवाणी बोलता है, शास्त्राभ्यास करते हुए सुखी होता है।

द्वितीय भावफल

मुखं चारुभाषं मनीषापि चार्वी मुखं चारु चारूणि वासांसि तस्य।

कुटुम्बे स्थितः पूर्वदेवस्य पूज्यः कुटुम्बेन किं चारु चार्वङ्गिकामः।।

जिस मनुष्य के जन्माङ्ग में कुटुम्ब भाव में शुक्र की स्थिति हो, वह मुख से सुन्दर वाणी बोलने वाला तथा कुशाग्र एवं भावपूर्ण बुद्धि वाला होता है। उसके मुख पर सुन्दरता होती है। सुन्दर एवं चित्र-विचित्र वस्त्र धारण करता है। परम्परागत देवपूजन का पक्षधर होता है। तथा सौन्दर्य सम्पन्नाओं के उपभोग का इच्छुक होता है। उसके कुटुम्ब में सभी कुछ सुन्दर होता है।

तृतीय भावफल

रतिः स्त्रीजने तस्य नो बन्धुनाशो गुरुर्यस्य दुश्चिक्यगो दानवानाम्।

न पूर्णो भवेत् पुत्रसौख्येऽपि सेनापतिः कातरो दानसङ्ग्रामकाले।।

जिसके जन्म समय में जन्म से तीसरे स्थान में दैत्याचार्य (शुक्र) स्थित हो, वह स्त्रियों में अधिक प्रेम नहीं रखता है। इसे बन्धु-बांधवों का पूर्ण सुख होता है। पुत्र सुख होने पर भी जातक को अधिक पुत्र संतति की चाह बनी रहती है। ऐसा जातक साहसी तथा उदार होने पर भी विवाद में अग्रणी नहीं होता है और न ही

दूसरों को देने में दानवीर होता है। याचक और शत्रु गण इसका परिहास करते हैं।

चतुर्थ भावफल

महित्वेऽधिको यस्य तुर्येऽसुरेज्यो जनैः किं जनैश्चापरै रुष्टतुष्टै।

कियत् पोषयेत् जन्मतः संजनन्या अधीनार्पितोपायनैरेव पूर्णः॥

जिस व्यक्ति के लग्न से चतुर्थस्थान में शुक्र हो, वह समाज में सम्मान पाता है। वह पूजा तथा उत्सव आदि कार्यों में बहुत मन लगाता है। महत्त्वपूर्ण कार्यों का सम्पादन करने से इसे अधिकाधिक आदर प्राप्त होता है। सभी (स्त्री-पुरुष) ऊपरीमन से ही सही, परन्तु इसकी प्रशंसा अवश्य करते हैं। अपने आत्मीयजनों को उपायन (भेंट) आदि देकर यह संतुष्ट होता है। प्रारंभिक जीवन से ही माता को सुखी करता है, उसका पालन-पोषण करता है।

पंचम भावफल

सपुत्रेऽपि किं यस्य शुक्रो न पुत्रे प्रयासेन किं यत्नसम्पादितोऽर्थः।

व्युदर्कं विना मन्त्रमिष्टाशनाभ्यामधीतेन किं चेत् कवित्वेन शक्तिः॥

जन्म कुण्डली में पंचम स्थान में स्थित शुक्र जातक को पुत्र सुख हेतु अच्छा है। अधिक प्रयास/उद्योग/परिश्रम न करने पर भी मनुष्य धनवान् हो जाता है। उसे मन्त्र जप में प्रवृत्ति तथा उत्तम भोजन (मीठा भोजन) प्राप्त होता है। विद्वानों की सभा में सम्मान मिलता है तथा कविता करने की विलक्षण शक्ति प्राप्त होती है।

षष्ठ भावफल

सदा दानवेज्ये सुधासिक्त शत्रुः व्ययः शत्रुगे चोत्तमौ तौ भवेताम्।

विपद्येत सम्पादितं चापिकृत्यं तपेन् मन्त्रतः पूज्यसौख्यं न धत्ते॥

जन्माङ्ग चक्र में षष्ठभावस्थित शुक्र का फल ठीक नहीं कहा गया है। छठे भाव का शुक्र जातक के लिए प्रबल शत्रुवर्ग उत्पन्न करता है, जिससे जातक सदैव दुःखी और तनावग्रस्त रहता है। जातक का व्यय, आय से अधिक (भले ही वह श्रेष्ठकार्यों में हो) होता है, इस कारण धनाभाव की स्थिति उत्पन्न होती है। प्रयत्न करने पर भी कार्य सिद्धि नहीं होती। कुमंत्र (दुष्ट योजना) से जातक दुःख पाता है तथा पूज्यजनों से भी सहयोग नहीं मिलता।

सप्तम भावफल

कलत्रे कलत्रात् सुखं, नो कलत्रात्, कलत्रं तु शुक्रे भवेत् रत्नगर्भम्।

विलासाधिको गण्यते च प्रवासी, प्रयासाल्पकः के न मुह्यन्ति तस्मात्॥

जिस जातक की कुण्डली में सप्तम भावस्थ शुक्र हो, उसे स्त्री से पूर्ण सुख होता है। उसकी पत्नी, रत्न, के समान, श्रेष्ठ गुणों वाली सन्तान को जन्म देती है। यह जातक विलासी, भ्रमण में रुचि रखने वाला तथा अल्प उद्योग करने वाला होता है। सभी सामाजिक जन इसके सुन्दर व्यक्तित्व (वाणी तथा शरीर) के कारण, इससे आकर्षित होते हैं।

अष्टम भावफल

जनः क्षुद्रवादी चिरं चारु जीवेत् चतुष्पात् सुखं दैत्यपूज्यो ददाति।

जनुष्यष्टमे कष्टसाध्यो जयार्थः पुनः वर्धते दीयमानं धनर्णम्॥

जिस मनुष्य के लग्न से अष्टम भाव में शुक्र स्थित हो, उसे गाय, भैंस, घोड़ा आदि चौपायों का सुख कहा गया है। जातक की वाणी में विवाद का, क्षुद्रता का भाव रहता है। सुखपूर्वक लम्बी आयु भोगता है। सफलताएँ (विजय आदि) बड़े कष्ट से प्राप्त होती है। एक बार ऋण (कर्ज) हो जाने पर वह चुकने का नाम नहीं लेता।

नवम भावफल

भृगौ त्रिकोणे पुरे के न पौराः कुसीदेन ये वृद्धिमस्मै ददीरन्।

गृहं ज्ञायते तस्यधर्मध्वजादेः सहोत्थादि सौख्यं शरीरे सुखं च॥

जिस जातक के नवम अर्थात् भाग्यभाव में जन्म का शुक्र स्थित होता है, उसे उस क्षेत्र के वासी ब्याज देते हैं अर्थात् वह साहूकारी करता है। यह अपने क्षेत्र में विशेष धनवान होता है। इसके धन में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहती है। अपने धार्मिक स्वभाव के कारण दानशील होता है, बहुतों को भाजनादि कराने से ख्याति भी अधिक होती है। इसे अपने बन्धुओं, मित्रों, सेवकों आदि से सुख होता है तथा शरीर सुख भी उत्तम होता है।

दशम भावफल

भृगुः कर्मगोगोत्रवीर्यं (गोत्रबीजं) रुणद्धि क्षयार्थोभ्रमः किन्नआत्मीय एव।

तुलामानतो हाटकं विप्रवृत्या जनाडम्बरैः प्रत्यहं वा विवादात् ।।

दशम भावस्थ शुक्र, जातक की जन्मकुण्डली में कुछ अच्छा फल प्रदर्शित नहीं करता। पुत्र संतान की उत्पत्ति में बाधाएँ आती हैं। जातक स्वयं भ्रम में रहने और अनात्मविश्वासी होने के कारण अपने कार्यों का विनाश कर लेता है। यह मनुष्य प्रतिदिन विप्रवृत्ति से, आडम्बर फैलाकर या लोगों को ठगकर स्वर्ण आदि वैभव अपने पास कर लेता है।

(**टिप्पणी —** दशमस्थ शुक्र के विषय में आचार्यों के मतों में पर्याप्त अन्तर है। विद्वज्जन/पाठकगण स्वबुद्धि-विवेक से निष्कर्ष निकाल सकते हैं।)

एकादश भावफल

भृगुः लाभगो यस्य लग्नात् सुरूपं महीपं च कुर्य्याश्च सम्यक्।

लसत् कीर्ति सत्यानुरागं गुणाढ्यं महाभोगमेश्वर्ययुक्तं सुशीलम्।

जिसके जन्मचक्र में एकादश भाव में शुक्र स्थित होता है, वह धन का प्रचुर लाभ उठाता है। वह श्रेष्ठ स्वभाव वाला, प्रसारित कीर्तिवाला, सत्य में श्रद्धा रखने वाला, गुणी, सभी भोगों-ऐश्वर्यों से युक्त विधि-निषेध के अधिकारों से युक्त (शक्ति सम्पन्न), सदाचारी, सुदर्शन तथा राजा के समान प्रभावशाली होता है। (उक्त फलों की सम्भावना, बलवान् शुक्र की स्थिति में ही करनी चाहिए।)

द्वादश भावफल

कदाप्येति वित्तं विलीयेत पित्तं सितो द्वादशे केलिसत्कर्म शर्मा।

गुणानां च कीर्तेः क्षयं मित्रवैरं जनानां विरोधं सदाऽसौ करोति ।।

जिस मनुष्य के जन्म लग्न से द्वादश स्थान में शुक्र हो, तो यदा-कदा धनप्राप्ति होवे। उसके शरीर में पित्त शान्त होकर, कफ धातु की अधिकता हो जाती है यह क्रीड़ा (विलास) और सत्कार्य से सुखी होता है। इसके गुणों और यश की स्थिति में विकृति आती है। यह अपने मित्रों के साथ वैर बाँध लेता है। और अन्य जनों से भी विरोध करता है।

।। अथ शनिभावफलम् ।।

प्रथम भावफल

धनेनातिपूर्णोऽतितृष्णो विवादी तनुस्थेऽर्कजे स्थूलदृष्टिर्नरः स्यात्।

विषं दृष्टिजन्त्वाधिकृद्व्याधिबाधाः स्वयं पीडितो मत्सरावेश एव ।।

यदि किसी मनुष्य के जन्म समय में, लग्न स्थान में शनि स्थित हो, तो वह धन से पूर्ण होकर भी धन के विषय में अतितृष्णा रखता है। मनोविकारों (ईर्ष्या आदि) से पीड़ित होने के कारण यह व्यर्थ ही विवाद करता है। इसकी दूरगामी (भविष्यगामी) दृष्टि नहीं होती, दृष्टि अर्थात् चिन्तन में भी खोट होती है। इसे शरीर-बाधा (वातजन्य प्रायः) और दूसरों से अकारण ईर्ष्या रखने से सदैव मनसिक पीड़ा बनी रहती है।

द्वितीय भावफल

सुखापेक्षया वर्जितोऽसौ कुटुम्बात् कुटुम्बे शनौ वस्तु किं किं न भुङ्क्ते।

समं वक्ति मित्रेण तिक्तं वचोऽपि प्रसक्तिं विना लोहकं को लभेत् ।।

जिस जातक की कुण्डली में लग्न से द्वितीय भाव में शनि हो, वह सुख पाने की इच्छा से स्ववंश/स्वकुटुम्ब को छोड़कर अन्यत्र नगरों में निवास करता हुआ, अनेक प्रकार की वस्तुओं/विषयों का उपभोग करता है। मित्र वर्ग (हितैषीजनों) से अकारण ही कटुवचन बोलता है, उनके साथ दुर्व्यवहार करता है। लोह धातु के व्यापार से सुख पाता है।

तृतीय भावफल

तृतीये शनौ शीतलं नैव चित्तां जनादुद्यमाज्जायते युक्तभाषी।

अविघ्नं भवेत् कर्हिचिन्नैवभाग्यं दृढाशः सुखी दुर्मुखः सत्कृतोऽपि ।।

जिस मनुष्य का शनि तीसरे भाव में (जन्म समय में) स्थित हो, उसका चित्त, भाई-बन्धुओं के स्नेह तथा कार्यक्षमता से भी शान्त नहीं होता है। परिश्रमी होने के बाद भी इसे अल्प सफलता ही मिलती है। यह अन्तःकरण से सुखी तो होता है, पर इसकी आकांक्षाएँ विशाल होती है। इसके कार्यों में विघ्न अवश्य ही आते हैं। पूर्णआदर करने पर भी यह प्रसन्नता के स्थान पर दुर्वचन ही बोलता है।

चतुर्थ भावफल

चतुर्थे शनौ पैतृकं याति दूरं धनं मन्दिरं बन्धुवर्गापवादः।

पितुश्चापि मातुश्च संतापकारी गृहे वाहने हानयो

वातरोगी ।।

जिस जातक की जन्म कुण्डली में सुखस्थान में शनि हो, वह पैतृक धन और आवास आदि से, वंचित रहता है। इसके बन्धु-बान्धव, जाति-वर्ग के लोग इसके ऊपर लांछन लगाते हैं। भवन और वाहन के संबंध में दुःख उठाना होता है। इसके अभिभावक (माता-पिता) इसके कारण क्लेश पाते हैं और ऐसा जातक वातव्याधियों से पीड़ित रहता है।

पंचम भावफल

शनौ पञ्चमे च प्रजा हेतु दुःखी विभूतिश्चला तस्यबुद्धिर्न शुद्धा।

रतिः दैवते शब्दशास्त्रे न तद्वत् कलिर्मित्रतो मन्त्रतः क्रोडपीडा ।।

जिस मनुष्य के पंचम स्थान में शनि हो, वह सन्तान के अभाव से नित्य सन्तप्त रहता है। उसका ऐश्वर्य, मान-सम्मान आदि घटता-बढ़ता रहता है। इसकी बुद्धि निर्मल नहीं होती है। देवता में, धर्मशास्त्र, व्याकरण आदि में इसकी वास्तविकता श्रद्धा नहीं होती है। मित्रों से कलह करता है। पूर्ण निष्ठा से मंत्र आदि नहीं जपता, फलतः उसका प्रभाव भी नहीं पाता। इसके कलेजे में पीड़ा होती है।

षष्ठ भावफल

अरेर्भूपतेश्चौरतो भीतयः किं यदीनस्य पुत्रो भवेद् यस्य शत्रौ।

न युद्धे भवेत्सम्मुखे तस्य योद्धा महिष्यादिकं मातुलानां विनाशः ।।

जिस जातक के जन्माङ्ग में, षष्ठ (रिपु) भाव में शनि स्थित हो, उसे प्रबल शत्रु, राजकीय अधिकारी वा चोर से भी भय नहीं होता। विवाद आदि में इसके समक्ष कोई विरोधी (शत्रु) नहीं ठहरता। अपने शत्रुओं के लिए यह अति भयंकर होता है। इसे चौपायों (गाय-भैंस आदि) का सुख होता है। इसके मामा प्रायः कष्ट में रहते हैं।

सप्तम भावफल

सुदारा न मित्रं चिरं चारु वित्तं शनौ द्यूनगे दम्पती रोगयुक्तौ।

अनुत्साहसन्तप्तकृद् हीनचेताः कुतोवीर्यवान् विह्वलो लोलुपः स्यात् ।।

जिस मनुष्य के जन्म लग्न से, जाया भाव में शनि स्थित होता है, तो उसे सुन्दर भार्या, श्रेष्ठ मित्र तथा पर्याव्त वैभव का सुख, अल्प समय तक ही मिलता है। पति-पत्नी दोनों सर्वदा अस्वस्थ रहते हैं। इसके मन में उमंग नहीं होती, मन में विषाद और घबराहट रहती है। लोभी होने से यह अपना विशेष प्रभाव नहीं बना पाता।

अष्टम भावफल

वियोगो जनानां त्वनौपाधिकानां विनाशो धनानां स को यस्य न स्यात्।

शनौ रन्ध्रगे व्याधितः क्षुद्रदर्शी तदग्रे जनः कैतवं किं करोतु ।।

जिस जातक के जन्म समय में अष्टम स्थान में शनि स्थित होता है, उसे उपाधि रहित, परन्तु ज्ञानी श्रेष्ठ पुरुषों का वियोग होता है। यह आत्मीय जनों के वियोग से भी दुःखी रहता है। इसके वित्त का भी नाश होता है। ऐसा जातक रोगों से घिरा हुआ, दूसरों में दोष ढूँढ़ने वाला और बहुत संकुचित मानसिकता वाला होता है। इस मनुष्य के आगे अन्य धूर्त लोग पराजित हो जाते हैं।

नवम भावफल

मतिस्तस्यतिक्ता न तिक्तं सुशीलं रतिर्योगशास्त्रे गुणोराजसः स्यात्।

सुहृद्वर्गतो दुःखितो दीनबुद्ध्या शनिः धर्मगः कर्मकृत् संन्यसेद्वा ।।

जिस मनुष्य के जन्मचक्र से नवम भाव में शनि स्थित हो, उसका चित्त विषयवासना से विरक्त होता है एवं सदाचार युक्त पुरुष होता है। यह, योग (धर्म, दर्शन, संस्कृति आदि) विषयक ग्रन्थों के परिशीलन में रुचि रखता है। यह रजोगुण की प्रधानता रखता है। अतिदया के कारण दूसरों के दुःख देखकर दुःखी होते हैं। दूसरों के दुःख दूर करने हेतु प्रयत्न करता है। अथवा (असफल रहने पर) संन्यासी हो जाता है।

दशम भावफल

अजा तस्य माता-पिता बाहुरेव वृथा सर्वतो दुष्टकर्माधिपत्यात्।

शनैरेधते कर्मगः शर्म मन्दो जये विग्रहे जीविकानां तु यस्य ।।

जिस मनुष्य के जन्म समय, कर्म भाव में शनि स्थित होता है, उसे आजीविका का सुख धीरे-धीरे (क्रमशः) मिलता है, यह अपने बाहुबल से ही कमाता है। विवाद में विजय पाता है। अधिकारों का दुरुपयोग (अपनी दुर्बुद्धि के कारण) करता है। मातृसुख बचपन में ही समाप्त हो जाता है तथा पिता का भी आश्रय

न होने से स्वयं के बाहुबल से जीवन संचालित होता है।

एकादश भावफल

स्थिरं वित्तमायुः स्थिरं मानसं च स्थिरा नैव रोगादयो न स्थिराणि।

अपत्यानि शूरः शतादेक एव प्रपञ्चाधिको लाभगे भानुपुत्रे ॥

जिस मनुष्य की जन्म कुण्डली में, एकादश भाव में शनि हो, वह स्थिर सम्पति वाला, लम्बी आयु वाला तथा स्थिर बुद्धि और परिपक्व मानसिकता वाला होता है। इसे व्याधियाँ पीड़ित करती हैं, परन्तु शीघ्र ही शान्त भी हो जाती हैं। सन्तान की ओर से कष्ट होता है। सौ प्रपञ्ची मनुष्यों में भी यह अग्रणी होवे, राग-द्वेषादि में निपुण तथा शूरवीर भी होता है।

द्वादश भावफल

व्ययस्थे यदा सूर्यसूनौ नरः स्यादशूरोऽथवा निस्रपो मन्दनेत्रः।

प्रसन्नो बहिः नोगृहे लग्नपश्चेद् व्ययस्थोरिपुध्वंसकृद् यज्ञभोक्ता ॥

जिस जातक के जन्मसमय में, लग्न से व्यय अर्थात् द्वादशस्थान में शनि स्थित हो, वह मनुष्य डरपोक, लज्जा से रहित अथवा मंददृष्टिवाला (नेत्रविकार युक्त) होता है। वह देशान्तर (परदेश) में प्रसन्न रहता है घर में प्रसन्न नहीं रहता। यदि शनि प्रथम भाव का (लग्न का) स्वामी होकर, व्यय भाव में स्थित है, तो जातक शत्रुओं का पराभव करता है तथा यज्ञादि कार्यों द्वारा धन-सम्पत्ति को अर्जित करता है।

॥ अथ राहु भावफलम् ॥

लग्न भावफल

स्ववाक्ये समर्थः परेषां प्रतापात् प्रभावात् समाच्छोदयेत् स्वान् परार्थान्।

तमो यस्य लग्ने स भग्नारिवीर्यः कलत्रेऽधृतिं भूरिदारोऽपि यायात् ॥

जिस मनुष्य की जन्म कुण्डली में, लग्न भाव में स्थित हो, तो वह स्वयं के बाहुबल से शत्रुओं को निस्तेज करता है। वह दूसरों के प्रभाव से अपना कार्यसिद्ध कर सकता है तथा दूसरों के तेज अपना और दूसरों का प्रयोजन सिद्ध कर सकता है। बहुत भार्याओं के होने पर भी वह वासना से तृप्ति अनुभव नहीं करता है।

द्वितीय भावफल

कुटुम्बे तमो नष्टभूतं कुटुम्बं मृषाभाषिता निर्भयो वित्तपालः।

स्ववर्गप्रणाशो भयंशस्त्रतः चेदवश्यं खलेभ्यो लभेत् पारवश्यम् ॥

जिस जातक की कुण्डली में लग्न से द्वितीय भाव में राहु स्थित हो, तो उसे कुटुम्ब से सुख नहीं मिलता अर्थात् उसमें स्वजन नष्टप्राय होते हैं। यह मनुष्य झूठ बोलने में नहीं हिचकता तथा भयरहित होता है। प्रयत्नपूर्वक यह सम्पत्ति की रक्षा करता है तथा अपने सामने बान्धवों की हानि देखता है। इसे सदैव शस्त्र से भय रहता है तथा दुष्टों के वशीभूत होता है।

तृतीय भावफल

न नागोऽथ सिंहो भुजाविक्रमेण प्रयातीह सिंहीसुते तत्समत्वम्।

तृतीये जगत्सोदरत्वं समेति प्रयातोऽपि भाग्यं कुतो यत्न हेतुः ॥

जिस जातक के जन्म लग्न से तीसरे स्थान में राहु स्थित हो, तो हाथी अथवा सिंह भी उसके बाहुबल की समानता नहीं कर सकते हैं। यह समस्त संसार से भाईचारा मानकर चलता है, भेदभाव नहीं करता। इसका भाग्य ही इसे सब कुछ देने में समर्थ होता है, अतः इसके कार्य बिना प्रयत्न अथवा अल्प प्रयत्न से ही सिद्ध होते हैं।

चतुर्थ भावफल

चतुर्थे कथं मातृनैरुज्यदेहो हृदिज्वालया शीतलं किं बहिः स्यात्।

स चेदन्यथा मेषगः कर्कगो वा बुधर्क्षेऽसुरो भूपतेर्बन्धुरेव ॥

जिस मनुष्य की जन्मपत्रिका में सुख भाव में राहु जन्म समय में स्थित हो, तो उस जातक की माता रोगिणी रहती है। जातक को मानसिक दबाव, तनाव रहता है। यदि राहु मेष, कर्क मिथुन और कन्या में स्थित हो, तो उक्त फल नहीं होता है। अर्थात् माता का सुख होता है, चित्त में स्थिरता और विचारों में परिपक्वता होती है। ऐसा जातक राजकीय कृपा भी प्राप्त करता है।

पंचम भावफल

सुते तत्सुतोत्पतिकृत् सिंहिकायाः सुतोभामिनीचिन्तया चित्ततापः।

सति क्रोडरोगे किमाहारहेतुः प्रपञ्चेन किं प्रापकादृष्टवर्ज्यम् ॥

जिस व्यक्ति के जन्माङ्गचक्र में पंचम भाव में राहु स्थित हो, तो वह उसे पुत्र-सुख देता है। (पुत्र रहित में बाधा या विलम्ब हो सकता है)। उसकी पत्नी कलहकारिणी होने से जातक के मनः सन्ताप में वृद्धि का कारण होती है। उसके कलेजे में निरन्तर पीड़ा होने से भोजनादि का भी सुख नहीं मिलता। बहुत यत्न करने पर भी, सफलता अल्परूपेण ही प्राप्त होती है, क्योंकि दैव कृपा का किंचित् अभाव होता है।

षष्ठ भावफल

बलं बुद्धिवीर्यं धनं तद्वशेन स्थितो वैरिभावेऽपियेषां जनानाम् ।।

रिपूणामरण्यं दहेदेव राहुः स्थिरं मानसं तत्तुला नी पृथिव्याम् ।।

जिस मनुष्य के जन्मचक्र से षष्ठ स्थानगत राहु हो, तो वह शत्रु के जंगल (वन) को भी भस्म करने की सामर्थ्य रखता है अर्थात् शत्रु समूह को अकेले ही पराजित करता है। षष्ठस्थ राहु जातक के बल, विचारशक्ति, उद्योग और सम्पत्ति आदि को स्थिरता प्रदान करता है। पृथ्वी पर उसके समान कोई नहीं होता, वह अद्वितीय होता है। इसका भाव यह है कि ऐसा जातक स्वयं को पर्याप्त सुखी अनुभव करता है।

सप्तम भावफल

विनाशं लभेयुः द्युने तद्युवत्यो रुजा धातुपाकादिना चन्द्रमर्दी।

कटाहे यथा लोडयेत् जातवेदा वियोगापवादाः शमं न प्रयान्ति ।।

जिस जातक की जन्म कुण्डली में जाया स्थान में जन्मकालिक राहु होता है, वह मनुष्य सदैव सन्तप्त रहता है और जिस प्रकार तीव्र अग्नि, कढ़ाही की वस्तुओं को खौलाती है, वैसे ही उस घर की स्त्रियाँ धातुपाक आदि रोगों से विनाश को प्राप्त होती हैं। यह जातक मित्रों बन्धु-बान्धवों के वियोग तथा लोकापवाद (मिथ्या आरोप/लांछन) से सदैव पीड़ित रहता है।

अष्टम भावफल

नृपैः पण्डितैः वन्दितोनिन्दितः स्वैः सकृद्भाग्यलाभोऽसकुद् भ्रंश एव।

धनं जातकं तं जनाश्च त्यजन्ति श्रमग्रन्थिकृद्रंध्रगो बध्नशत्रुः ।।

जिस मनुष्य के जन्म लग्न से रन्ध्र स्थान में राहु स्थित हो, तो उसे उदरस्थ वायु विकार पीड़ित करता है, क्योंकि यह विशेष परिश्रमी होता है। इसके कुटुम्बीजन इसे त्याग देते हैं। यह पैतृक धन और सम्पत्ति प्राप्त नहीं करता। यह मनुष्य राज्याधिकारियों विद्वानों तथा श्रेष्ठ पुरुषों से सम्मानित होता है। अपने जनों (स्वजनों) द्वारा निन्दित होता है। इसका भाग्योदय तो एक बार ही होता है, परन्तु हानि बारम्बार होती रहती है।

नवम भावफल

मनीषी कृतं न त्यजेत् बन्धुवर्गं सदा पालयेत् पूजितः स्याद्गुणैः स्वैः।

सभाद्योतको यस्य चेत् त्रित्रिकोणे तमः कौतुकी देवतीर्थे दयालुः ।।

जिसके जन्म समय में, लग्न से नवम भाव में राहु हो, वह बुद्धिमान् (मनीषि) होता है। अपने सद्गुणों से समाज में सम्मान पाता है। स्वयं की चतुराई से सभा के मध्य आकर्षण का केन्द्रबिन्दु बन जाता है। यह शिष्ट और दयालु होता है। देवताओं, तीर्थों, धार्मिक कार्यों में विश्वास तथा रुचि रखता है, कृतज्ञ होता है। यह सदैव अपने कुटुम्ब के पालन में अग्रणी होता है।

दशम भावफल

सदाम्लेच्छसंसर्गतोऽतीवगर्व लभेत् मानिनी कामिनी भोगमुच्चैः।

जनैर्व्याकुलोऽसौ सुखं नाधिशेते मदार्थव्ययी क्रूरकर्मा खगेऽगौ ।।

राहु जिस कुण्डली में लग्न से दशम भाव में स्थित होता है, वह मनुष्य नशे (मद्यपानादि) के हेतु से धनखर्च करने वाला और निछनीय कार्य करने वाला होता है। नशे का अर्थ यहाँ बिना सोचे-विचारे धन फूँक देना इस भाव से भी लिया जा सकता है। बुरे कार्यों में संलग्न रहने से यह रात्रि में सुख से सोता नहीं है। क्षुद्रों की संगति से अभिमानी हो जाता है। मानिनी और सुरूपधारिणी नारियों से निकटता प्राप्त कर संसर्ग-सुख भोगता है।

एकादश भावफल

सदाम्लेच्छतोऽर्थंलभेत् साभिमानः चरेत् किंकरेण व्रजेत् किं विदेशम्।

परार्थाननर्थी हरेद् धूर्तबन्धुः सुतोत्पत्तिसौख्यं तमो लाभगश्चेत् ।।

जिस मनुष्य के जन्म समय, एकादश भाव में सिंहिका पुत्र (राहु) बैठा हो, वह व्यक्ति सदैव म्लेच्छों के धन से धनी होता है। सेवकों (अधीनस्थों) के साथ अभिमान पूर्वक विचरण करता है। इसे विदेश में जाने की आवश्यकता नहीं होती। (इसे स्वदेश में हीर किसी वस्तु का अभाव नहीं रहता। यह धूर्तों की संगति करता है। तथा अनर्थकारी होकर, दूसरों के धन को हड़प लेता है।

यह पुत्रजन्म से सुखी होता है।

द्वादश भावफल

तमो द्वादशे दीनतांपार्श्वशूलं प्रयत्ने कृतेऽनर्थतामातनोति।

खलैः मित्रतां साधुलोके रिपुत्वं विरामे मनोवांछितार्थस्य सिद्धिम्।।

जन्म लग्न से द्वादश भाव में गया हुआ राहु, जातक को दीनता अर्थात् दरद्रिता देता है। उसके पार्श्व भाग (पसली) में पीड़ा होती है। यह जातक अत्यधिक परिश्रम करने पर भी अपने कार्यों में सफलता प्राप्त नहीं करता। यह सज्जनों से विरोध रखता है और दुष्टजनों को मित्र बनाकर चलता है। जीवन के उत्तरार्द्ध में इसकी महत्त्वाकांक्षाएँ पूर्ण होती हैं।

।। अथ केतु द्वादश भावफल।।

लग्न भावफल

तनुस्थः शिखी बान्धवक्लेशकर्ता तथा दुर्जनेभ्यो भयं व्याकुलत्त्वम्।

कलत्रादिचिन्ता सदोदूवेगता च शरीरे व्यथा नैकधा मारुती स्यात्।।

जिस मानव के जन्म लग्न में शिखी अर्थात् केतु स्थित हो, उसे बान्धवों की पीड़ा होती है। लग्नस्थ केतु के कारण दुष्ट लोगों से भय और मन में घबराहट बनी रहती है। जातक स्त्री और पुत्र की चिन्ता से व्याकुल रहता हुआ, चित्त में भ्रमित रहता है। वातरोगों से इसे शारीरिक कष्ट भी सहना पड़ता है।

द्वितीय भावफल

धने केतुरव्यग्रता किं नरेशात् धनेधान्यनाशो मुखेरोगकृश्च।

कुटुम्बाद्विरोधो वचः सत्कृतं वा भवेत् स्वेगृहे सौम्यगेहेऽतिसौख्यम्।।

जन्म लग्न से, द्वितीय भाव में केतु की स्थिति होने पर राजकीय पक्ष की ओर से धन हड़पने की चिन्ता और भय बना रहता है। चित्त में अशान्ति और धान्यादि की हानि होती है। इसमें अतिरिक्त कुटुम्बी जनों और मित्रों से विरोधाभास होता है। मुख से दुर्वचन निकलने की आशंका होती है। यदि केतु मेष, मिथुन या कन्या राशि का हो, तो पूर्ण सुखदायक फल होता है।

तृतीय भावफल

शिखी विक्रमे शत्रुनाशं विवादं धनं भोगमैश्वर्यतेजोऽधिकं च।

सुहृद्वर्गनाशं सदा बाहुपीडां भयोद्वेगाचिन्ताऽकुलत्वं विधत्ते।।

जन्म लग्न से तृतीयस्थ केतु होने पर जातक पूर्णरूप से शत्रुजयी होता है। अकारण विवाद एवं विग्रह उत्पन्न होते हैं। जाक को विलास ऐश्वर्य और तेजस्विता पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होते हैं। मित्रों की हानि होती है। बाहुओं में पीड़ा होती है सदैव ही भय और आशंकाएँ जातक के मन को घेरे रहती हैं।

चतुर्थ भावफल

चतुर्थे च मातुः सुखे नो कदाचित् सुहृद्वर्गतः पैतृकं नाशयेति।

शिखी बन्धुवर्गात् सुखं स्वोच्चगेहे चिरं नो वसेत् स्वेगृहे व्यग्रता चेत्।

जन्म समय में लग्न से चतुर्थ स्थानगत केतु से, जातक को माता और मित्रों का सुख प्राप्त नहीं होता है। उसके पिता का धननाश होजाता है तथा जातक घर में बहुत समय तक निवास नहीं कर पाता । यदि घर में रहे, तो डरा-घबराया-सा बना रहता है। यदि केतु धनु या मीन राशि अर्थात् उच्चवर्ग या स्वराशि का हो, तो जातक को बान्धवों की ओर से प्रसन्नता एवं सुख होता है।

पंचम भावफल

यदा पञ्चमे राहुपुच्छं प्रयाति तदा सोदरे घातवातदिकष्टम्।

स्वबुद्धिव्यथा संततं स्वल्पपुत्रः स दासो भवेद् वीर्ययुक्तो नरोऽपि।।

जिस मनुष्य के जन्म लग्न से पंचमस्थान में केतु हो, तो उसके सहोदरों को शस्त्र से अपघात (चोट) अथवा वायुरोग होता है। जातक की स्वयं की वैचारिक/मानसिक त्रुटियों से शारीरिक कष्ट होता है। इसे एक या दो पुत्र के सुख की सम्भावना रहती है। यह अत्यनत उद्यमी/परिश्रमी होकर भी दूसरों की अधीनता में कार्य करता है।

षष्ठ भावफल

तमः षष्ठभागेगते षष्ठभावे भवेत् मातुलान् मानभङ्ग रिपूणाम्।

विनाशश्चतुष्पात् सुखं तुच्छवित्तं शरीरं सदानामयं व्याधिनाशः।।

जिस मनुष्य के जन्म लग्न से रिपु भाव में राहुपुच्छ (केतु) स्थित हो, तो जातक की मानहानि मामा के द्वारा होती है

अर्थात् मामा के साथ परस्पर वैमनसय रहता है। इसके शत्रुओं का स्वतः ही विनाश होता है। चौपाए जानवरों (गाय -बकरी-भैंस) का इसे सुख होता है। इसके पास अधिक धन का संग्रह नहीं हो पाता, परन्तु यह नीरोगी होता है, रोग आ जाए तो भी शीघ्र ठीक हो जाता है।

सप्तम भावफल

शिखी सप्तमे भूयसी मार्गचिन्ता निवृत्तः स्वनाशोऽथवा वारिभीतिः।

भवेत् कीटगः सर्वदालाभकारी कलत्रादिपीडा व्ययो व्यग्रता चेत्॥

जब राहुपुच्छ, जन्म समय लग्न से सप्तम भाव में हो, तो यात्रा में चिन्ता होती है। यात्रा से लौटकर आने पर धनहानि का सामना करना पड़ता है अथवा कभी-कभी जलभय भी होता है। स्त्री एवं पुत्रों का क्लेश रहता है। व्यय अधिक होता है तथा चित्त में घबराहट होती है। यदि सप्तम में वृश्चिक राशि हो, तो केतु सदा ही धनलाभ कराता है।

अष्टम भावफल

गुदा पीड्यतेऽर्शादिरोगैरवश्यं भयं वाहनादेः स्वद्रव्यस्यरोधः।

भवेदष्टमे राहुपुच्छेऽर्थलाभः सदा कीटकन्याऽजगो युग्मे तु॥

जिस जातक के जन्म लग्न से अष्टम स्थान में केतु हो, उसे अर्शादि रोगों (बवासीर, भगन्दर) से पीड़ा अनुभव होती है। इसे सवारी (घोड़ा अथवा वर्तमान में स्कूटर, मोटर साइकल आदि) से गिरने का भय रहता है। यदि यह अपना धन दूसरों को दे देता है, तो वह कठिनाई से वापस आता है। यदि यह केतु मंगल और बुध की राशियों अर्थात् मेष-वृश्चिक या मिथुन-कन्या में स्थित होता है, तो जातक को धनलाभ कराता है।

नवम भावफल

शिखी धर्मभावे यदाक्लेशनाशः सुतार्थी भवेत् म्लेच्छतोभाग्यवृद्धिः।

सहोत्थव्यथां बाहुरोगं विधत्ते तपोदानतो हास्यवृद्धिं तदानीम॥

जिस व्यक्ति के जन्मसमय, लग्न से नवमस्थ केतु हो, वह क्लेशों पर विजय पाता है। वह पुत्र प्राप्ति की कामना रखता है। (भाव यह है कि पुत्र संतति का अभाव रहता है।) निम्नस्तर के लोगों द्वारा इसकी भाग्योन्नति होती है। इसे सहोदरों से क्लेश तथा बाहुओं में रोग (शूल आदि) होता है। इसके सदकार्यों को भी लोग आडम्बर समझकर इसकी हँसी उड़ाते हैं।

दशम भावफल

पितुर्नो सुखी कर्मगः यस्य केतुः यदा दुर्भगं कष्टभाजे करोति।

तदा वाहने पीड़ितं जातु जन्म वृषाजालिकन्यासु चेत् शत्रुनाशम्॥

जिस मनुष्य के जन्माङ्गचक्र में, लग्न से दशमस्थ केतु हो, तो जातक भाग्यविहीन होकर कष्ट भोगता है। इसके पिता से इसके विचार नहीं मिले। वाहनादि से गिरकर चोट खाता है। यदि यह जातक मेष, वृष, कन्या और वृश्चिक लग्न में जन्म लेता है, तो शत्रुओं का पराभव करता है।

एकादश भावफल

सुभाग्यः सुविद्याधिको दर्शनीयः सुगात्रः सुवस्रः सुतेजोऽपि तस्य।

दरे पीड्यते सन्ततिः दुर्भगा च शिखी लाभगः सर्वलाभे करोति॥

यदि किसी मनुष्य की कुण्डली में लग्न से एकादश भाव में केतु स्थित हो, तो उस जातक को सभी प्रकार से सुख और लाभ होता है। ऐसा जातक परमभाग्यशाली, विद्यावान्, सुन्दर रूप वाला, अच्छी शारीरिक गठन वाला, सुवेश धारी और तेजवान् होता है। इसकी सन्तति भाग्यहीन तथा भयभीत होती है।

द्वादश भावफल

शिखीरिःफगो वस्तिगुह्यांघ्रिनेत्रे रुजापीडनं मातुलान्नैव शर्म।

सदा राजतुल्यं नरं सद्व्ययं तद् रिपूणां विनाशं रणेऽसौ करोति॥

जिस जातक के जन्म लग्न से द्वादशभाव में केतु होता है, तो वह मनुष्य राजा की भाँति (अतिधनाढ्य की भाँति) सम्मान-सुख-वैभव का भोग करता है। इसका धन उत्तम कार्यों में खर्च होता है। इसके विरोधी/शत्रु, इसके द्वारा पराजित होते हैं। इसे नाभि (टुण्डी) से नीचे, गुप्तांग, पैर और नेत्रों में पीड़ा होती है। प्रायः यह जातक मामा के सुख से वंचित रहता है।